(IJDSSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

LITERATURE AND NATURE: AN INTRODUCTION

Dr. (Smt.) Ranjana Kulshreshtha

Associate Professor & HOD (Hindi), Th. Biri Singh College, Tundla, Firozabad

साहित्य एवं प्रकृतिः एक परिचय

डॉ० (श्रीमती) रंजना कुलश्रेष्ठ

एसोसियेट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी)

ठा० बीरी सिंह महाविद्यालय टूण्डला फिरोजाबाद

बातें तो वही है सिर्फ कहने के तरीके अलग अलग हैं। समकालीन समस्याओं से नजरें चुराकर उत्तर आधुनिक मानव सुचारु रुप से जीवन यापन तो कर सकता है। पर स्वयं के लिए नाना नाना प्रकार की समस्यायें निरंतर पैदा कर रहा है। आज उसके लिए पर्यावरण सबसे बड़ी चुनौती है। प्रश्न यह है कि क्या संतुलित विकास और पर्यावरण में सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है? ग्लोबल वारमिंग एवं ओजोन परत का घिसना जैसे वर्तमान मुददों ने समस्त विश्व को बारुद के ढ़ेर पर लाकर रख दिया है। विस्फोट अवश्यमभावी है। क्या साहित्य एवं दर्शन इस संकटाप्पन घड़ी में अपने सफल, सार्थक एवं सक्रिय भूमिका से हम निजात दिला पायेंगे ? यह एक यक्ष प्रश्न है। मानव जीवन का इतिहास इस बात का गवाह है कि उसकी घोर गाथा एवं साधना सदैव संघर्ष की गोद में सयानी हुई, घोर निराशा की तहहटियों से गुजरती हुए कभी मुरझाई नहीं। अपितु उपलब्धी की मंजिल पर आ रुकी। ईश्वर प्रदत्त एवं निर्मित विश्व में मनुष्य ने जैसी ही आंखे खोली, स्वयं को प्रकृति के गोद में पाया। कालांतर में उदर पूर्ति हेतु उसने एक ऐसी कारोबारी संस्कृति को जन्म दिया, जिससे उसका सदियों पुराना प्रकृति से रिश्ता क्षण भर में टूट गया। यह सबंध विच्छेद ही अंग्रेजी साहित्य के रोमान्टिक काल का या यूँ कहें कि आधुनिक विश्व साहित्य का केद्रीय भाव है। सम्भवतः औधौगिक क्रांति , फ्रांसिसी क्रान्ति जो आज आधुनिकता का पर्याय बन चुके है। मनुष्य जनित एवं प्रतिपादित करोबारी संस्कृति के दूरगामी प्रभाव हैं। ब्रिटिश साहित्य के रोमान्टिक काल के सुप्रसिद्ध महाकवि विलियम व्डलर्स्थथ ने ठीक ही कहा है—

(IJDSSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

" To her fare works did nature link,
the human soul that through me ran,
and much it grieved my heart to think,
what man has made of man?"[1]

तात्प्रर्य यह है कि मनुष्य क्या था, और क्या हो गया !

उसने ईश्वर प्रदत्त संरचना में मूलभूत परिवर्तन कर ईश्वरीय योजना को ही चौपट कर दिया। कवि ने सरल, सुगम एवं सुवोध शब्दों में उपरोक्त सार गर्मित तथ्य की अमिव्यंजना अन्यत्र भी किया है।

"The world is too much with us,
Getting and spending, we lay waste our powers,
Little we see nature that is ours,
We have taken our hearts away, (Asordid Boon) [2]

संसारिकता में लिप्त मानव ने अपनी पूरी ताकत पैसे कमाने एवं खर्च करने में लगा दी। अब उसका प्राकृतिक एवं नैसर्गिक तत्वों जैसे नदी, पहाड़, झरने, इत्यादि से कोई सारोकार ना रहा। प्रकृति की दुनिया में एक अजनबी की तरह रहा। यह उसका सौभाग्य था, या दुर्भाग्य ? वरदान या अभिशाप, कहा नहीं जा सकता। निम्नलिखित पंक्तियों में प्रकृति के प्रति अपने उद्गार को व्डर्सवर्य ने पुनः व्यक्त किया है—

"To me the meanest flower that blows
gives me thought that too often lie
too deep for tears" [3]

प्रकृति ही मनुष्य के सुखदुख का सच्चा साथी है। इसका साहचर्य कवि के स्मृति पटल पर अविस्मरणीय स्थान बन चुका है। एक साधारण, मामूली फूल भी कवि को प्रेरणा का श्रोत जिससे वह धनीभूत पीड़ा को अपने शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने में सक्षम है। हर्ष और विषाद से आप्लावित उपरोक्त पंक्तियां व्डर्सवर्थ के अनुभव रूपी नयनों से व्यक्त प्रमाणिक वाणी सी लगती है। साहित्य को भाषा की सीमाओं में कैद करना कतई उचित नहीं है। हमें अपनी मातृभाषा की उपेक्षा नही करनी चाहिए। हमें बेशक अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के विद्वान हो सकते हैं पर शेक्सपीयर मिल्लटन नहीं, ठीक उसी प्रकार से जैसे कोई विदेशी, अंग्रेज अथवा अमेरिकन या ऑस्ट्रेलियन सुर या तुलसी हो सकता। सम्भवतः यही वजह होगी जिससे प्रयागराज विश्वविद्यालय कार्यरत अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के आचार्य, हरिवंश राय बच्चन, जिन्हें कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से प्रथम भारतीय पी०एच०डी० धारक का एवं प्रोफसर T. R.Henn के शोध विद्वान होने का गौरव प्राप्त है। इन्होने अपनी मौलिक रचना हिंदी में की। हलाबाद एवं एवं आनन्दवाद के प्रवर्तक, निशा निमंत्रण एवं मधुकलश के छीटे छिरकने वाले कविराज, बच्चन मे प्रकृति से जुड़ी हुई यादों को निम्न अधोलिखित शब्दों में पिरोया है—

(IJDSSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

"जो बीत गई सो बात गर
जीवन में एक सितारा था
माना वह बेहद प्यारा था
वह डूब गया तो डूब गया
अंबर के आनन को देखा
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे टूटे
जो छूट गये को फिर कहाँ मिले
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अम्बर शोर मनाता है.
जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में वह था एक कुसुम
थे उस पर निछावर तुम
वह सुख गया तो सुख गया
मधुवुन की छाती को देखो
सूखी कितनी इसकी कलियों
मुर्झायीं कितनी वल्लरियाँ
जो मुझाई फिर कहाँ खिली
पर बोलो सुखे फूलों पर
कब मधुवन शोर मचाता है
जो बीत गई सो बात गई [4]

प्रस्तुत कविता की रचना कवि की पहली पत्नी श्याम के असामयिक निधन से उत्पन्न निर्वात से हुई। कवि ने इंसान को नैराश्यपूर्ण स्थिति में भी आशा का दामने थामने को कहा है। यश-अपयश, आमोद-प्रमोद, लाभ-हानि ही हमारी नियति है। पश्चाताप के अश्रुधार समय की बर्बादी की आधार शिला है। सच्चा मनुष्य वही है जो अतीत की यादों के अनावश्यक हस्तक्षेप से स्वयं को दूर रखे। यों तो मधुर प्रेम का मिलन अनन्त है। विरह प्रेम की जागृत गति है। यह एक प्रकार का सुसुप्त मिलन भी है। ऐसा कहा जाय तो लेशमात्र भी अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिए। जो बीत गया, जो चला गया उसे हम पुनः प्राप्त नहीं कर सकते हैं। कवि ने स्वयं को सांत्वना देने के लिए दो उदाहरण प्रस्तुत किये —

(IJDSSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

आकाश और मधुवन आसमान में टिमटिमाने वाले सितार सुबह की सूर्य की पहली किरण के निकलने से पूर्व ही विलुप्त हो जाते हैं। आश्चर्य है अम्बर को इसकी शिकन भी नहीं हो पाती । मनुष्य को चाहिए प्रकृति से यह सीख ले, जो चीजे जीवन से हमेशा के लिए जा चुकी है उनके लिए आठ-आठ आँसू बहाना पूर्णतः अनुचित है। गीतकार कवि हरिवंशराय बच्चन ने दूसरा उदाहरण मधुवन से लिया है। इसकी लीला भी विचित्र है। सुबह में खेलती हुई कलिया शाम को निष्प्राण हो जाती हैं। मधुवन फिर भी अपनी धुन में रहता एवं जीता है। दुख-दर्द मानव जीवन के अभिन्न अंग है। इनसे छुटकारा कहाँ ? गति ही जीवन है अगति मृत्यु | बादलों की गोद से बिछड़ी हुई बूँद वियोग के व्याघात से विकल हो जाती है। खैर कवि ने यहाँ प्रति प्रकृति का रचनात्मक स्वरूप का चित्रण किया है। इसकी सकरात्मक भूमिका हमें जीवन्त बनाती है। इनमें उर्जा शक्ति अपार है।

गीत मर्मस्पृशी है। कवि की भाषा भाव के अनुरूप है। सहज अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति कविता की प्रमुख विशेषता है। बच्चन का विचार है, "सचेत कल्पना से शिथिल रूपकावली गीत के लिए अधिक स्वभाविक, सटीक और प्रभावकारी होती है। कला सब अपने से लाई हुई से कुछ अपने आप हुई अधिक छूती है। अपने आप आए हुए उपकरण में केवले प्रतीक नदी और चीजें भी होती हैं लय,ध्वनि, छंद और कुछ ऐसा भी जो अव्याख्येय होता है Incantationu यानि , जादू जो लिए सिर चढ़ कर नही ह्रदय में पैंठकर बोलता है।[5]

साहित्य एवं प्रकृति की चर्चा अपूर्ण है पंडित राम नरेश त्रिपाठी रचित हिन्दी काव्य में व्यक्त प्रकृति / पर्यावरण बोध के बिना, पथिक कवि के प्रकृति प्रेम को दर्शाता है। छायावादी कवि ने ठीक ही कहा है

"जाना नहीं चाहता हूँ मैं क्षणभर को भी जग में,
चलता रहूँ यही इच्छा है, सदा प्रेम के मग में
यह इच्छा है, नदी और नालों का देश धरूँगा
गाता हुआ गीत मस्ती से पर्वत से उतरूगां
यह इच्छा है, वन सुगन्ध फूलों के बीच बसूँगा।"
यह इच्छा है, कुंज कुंज में वायु बिना विचरूंगा।[6]

कुशल पाठक जिज्ञासा वश यह जानने को आतुर है कि वे कौन से तत्व है जो कवि को प्रकृति चित्रण के लिए प्रेरित करते हैं। वन, उपवन, रिल निर्झर महज सुन्दरता के प्रतीक है या उनकी उपादेयता के नए आयामों को पुनः परिभाषित करने की नितांत आवश्यकता है। इस क्रम में हमें आचार्य राम चन्द्र शुक्ल द्वारा प्रतिपादित प्रकृति विषयक विचारों का संदर्भ लेना चाहिए। "सोचने की बात है कि क्या प्राचीन कवियों ने इनका वर्णन इसी रूप में किया है? क्या विश्व ह्रदय वाल्मीकी ने वनों और नदियों आदि का वर्णन इसी रूप में किया है ? क्या महाकवि कालिदास ने कुमार संभव के आरम्भ में ही हिमालय का जो विशद वर्णन किया है। वह केवल श्रृंगार के उद्दीपन की दृष्टि से

(IJDSSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

किया है ? कभी नहीं ये वर्णन पहले तो प्रसंग प्राप्त है अर्थात, आलम्बन की परिस्थिति को अंकित करते हैं। इनके बिना आश्रय और आलम्बन शून्य में खड़े मालूम होते हैं।[7]

आचार्य राम चन्द्र शुक्ल की आलोचनात्मक रचना का महत्व इस बात से और भी बढ़ जाता है, उनका पर्यावरण बोध / प्रकृति प्रेम देश प्रेम से जुड़ा हुआ है। "देश प्रेम है क्या? प्रेम ही तो है। इस प्रेम का आलम्बन क्या है? सारा देश अर्थात मनुष्य, पशु, पक्षी, नदी, नाले वन, पर्वत सहित सारी भूमि। प्रेम किस प्रकार का है ?

यह साहचर्य प्रेम है। जिनके बीच हम रहते हैं, जिनकी बाते बार बार सुनते रहते हैं, जिनका हमारा हर घड़ी का साथ होता है। सारांश यह है जिनके साहित्य का हमें अभ्यास पड़ सकता है, जिनके रागात्मक संस्कार मानव अंत:करण में दीर्घ परम्परा के कारण मूल रूप से बद्ध है, अत: इनके द्वारा जैसे रस परिपाक संभव है, वैसा कल कारखाने, गोदाम स्टेशन, इंजिन हवाईजहाज, इत्यादि द्वारा नहीं |" [8]

उक्त विषय पर डा० नामवर सिंह की सोच रामचंद्र शुक्ल से मिलती जुलती सी मालूम पड़ती हैं। "राष्ट्रीय जागरण के युग के की अनेक कविताओं और कहानियों में दिखलाया गया है " साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्यकार अपने युग का प्रतिनिधि होता है। पुनः साहित्य एवं प्रकृति में अटूट सम्बन्ध है। विश्व को कोई भी साहित्य प्रकृति चित्रण के बिना अधूरा है। वजह यह है कि मानव जीवन की कहानी की प्रकृति में शुरू होती है। पूर्व पाषाण, नव पाषाण युग इसी कहानी को दुहराते हैं। जीवन कभी निर्भर का पदार्थ बन जाता है। प्रकृति की महिमामाई गाथा को कवि कहानीकार अपने नायक एवं नायिकाओं के माध्यम से पाठक तक पहुँचाता है। अंग्रेजी कवियों ने भी प्रकृति प्रेमका उल्लेख किया गया है। मानव जीवन को प्रकृत पर प्रकृति का प्रभाव अद्भूत है। हिन्दी साहित्य ने समय समय पर अनेकानेक महानीय विभूतियों को जन्म दिया जिनके पदचाप, पैरों की आहट आज भी स्पष्ट सुनाई पड़ती है। कि देश प्रेम की भावना प्रकृति प्रेम से पैदा हुई है। फिर उसके परिणाम स्वरूप भावुक हृदय देश प्रेम सेवा तथा देशोउद्धार के लिए प्रवृत्त हुए। [9]

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि साहित्यकारों ने अपनी भाषाओं में चाहे वह हिन्दी हो या संस्कृत या अंग्रेजी पर्यावरण की महत्ता पर प्रकाश डाला है। ऐसा माना जाता है प्रकृति की ओर लौटो" जो कि रोमान्टिक आंदोलन का मूलभत है, को प्राति फ्रांसिसी दार्शनिक रूसों की कालजई रचना सामाजिक समझौता से बल मिला है। उनका विचार है, "मनुष्य तो स्वतंत्र पैदा हुआ है पर सर्वत्र वह जंजीरों में जकड़ा हुआ है।" मानव प्रकृति में ही अपनी सारी समस्याओं का हल ढूंढता है। सृष्टि के आरम्भ में वह पूर्णतया स्वतन्त्र था। रूसी रूसो ने उस आरम्भिक अवस्था को State of Nature की संज्ञा दिया है। मानव की अनंत आवश्यकताओं ने उसे प्रकृति से काफी दूर कर दिया। रूसो ने अपने उपरोक्त विचार को लगभग 1762 के आसपास प्रतिपादन किया। मजे की बात यह है फ्रांस के जिस शहर यानि पेरिस में उक्त कथन की उद्घोषण की, वह शहर करीब करीब ढाई सौ वर्षों के बाद अंतराष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन का केन्द्र बना निःसन्देह साहित्य स्थान एवं समय की सरहदों को तोड़ देता है।

(IJDSSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

संदर्भ सूची-

1. Palgrave Golden Treasure, Palgrave Macmillan London, 2008, P.19.
2. Palgrave Golden Treasure, Palgrave Macmillan London, 2008, P.21.
3. E-Albert, History of English literature, Oxford University Press, New Delhi 2015 P -298.
4. जो बीत गई सो बात गई - हरिवंश राय बच्चन
5. बच्चन, प्रवास की डायरी, 1971, पृ. 325
6. रामदेश त्रिपाठी, पथिक, हिन्दी प्रभाग मन्दिर प्रयाग 1920 पृ० 45
7. आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, ग्रंथावली, भाग-3, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ-106
8. आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, ग्रंथावली, भाग-3, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ-107
9. डॉ. नामवर सिंह, 'छायावाद', पुनमुद्रण, दिल्ली- 1995, पृ. 35

REFERENCES

1. Palgrave Golden Treasure, Palgrave Macmillan London, 2008, P.19.
2. Palgrave Golden Treasure, Palgrave Macmillan London, 2008, P.21.
3. E-Albert, History of English literature, Oxford University Press, New Delhi 2015 P -298.
4. Jo Beet Gyi So Baat Gyi: Harivansh Rai Bachchan
5. Bachchan, Pravaas ki Diary, 1971, pg 325
6. Ramdesh Tripathi, Pathik, Hindi Prabhag Mandir, Prayaag 1920 pg 45
7. Acharya Ram Chandra Shukla, Granthawali, Part-3, New Delhi 2007, pg 106
8. Acharya Ram Chandra Shukla, Granthawali, Part-3, New Delhi 2007, pg 107
9. Dr Namvar Singh, ‘Chhayavaad’, Re-print, Delhi 1995 pg 35